ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in August 2025

स्वामी विवेकानंद: जीवन, दर्शन और वैश्विक प्रभाव (शोधात्मक अध्ययन)

Radha Panwar, Research Scholar, Department of History, Jyoti Vidhyapeeth Women University, Jaipur
Amit Chamoli, Department of History, Jyoti Vidhyapeeth Women University, Jaipur

भूमिका

स्वामी विवेकानंद उन्नीसवीं शताब्दी के उन महानतम विचारकों और आध्यात्मिक विभूतियों में से हैं, जिन्होंने भारतीय चिंतन परंपरा को आधुनिक विश्व के समक्ष न केवल प्रस्तुत किया, बल्कि उसे एक नवीन बौद्धिक और नैतिक प्रतिष्ठा भी प्रदान की। उनका व्यक्तित्व साधु, दार्शनिक, समाज-सुधारक, राष्ट्रचिंतक और सांस्कृतिक दूत—इन सभी रूपों का एक दुर्लभ समन्वय था। औपनिवेशिक भारत का समाज उस समय राजनीतिक परतंत्रता, आर्थिक शोषण, सामाजिक जड़ता और सांस्कृतिक आत्महीनता से ग्रस्त था। ऐसे ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में स्वामी विवेकानंद का उदय एक वैचारिक क्रांति के रूप में हुआ, जिसने भारतीय समाज को आत्मबोध, आत्मविश्वास और आत्मगौरव की दिशा में पुनः उन्मुख किया। यह शोध-पत्र स्वामी विवेकानंद के जीवन, उनके दार्शनिक चिंतन, सामाजिक दृष्टिकोण तथा उनके वैश्विक प्रभाव का अकादमिक और विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

शोध के उद्देश्य एवं अनुसंधान प्रश्न

इस शोध-पत्र का प्रमुख उद्देश्य स्वामी विवेकानंद के जीवन, दर्शन और सामाजिक दृष्टिकोण का ऐतिहासिक तथा दार्शनिक विश्लेषण प्रस्तुत करना है। अध्ययन का मूल अनुसंधान प्रश्न यह है कि किस प्रकार स्वामी विवेकानंद ने पारंपरिक भारतीय वेदांत को आधुनिक वैश्विक संदर्भ में पुनर्परिभाषित किया तथा उसका सामाजिक उपयोग स्थापित किया। इसके अंतर्गत उनके विचारों की समकालीन प्रासंगिकता और आधुनिक भारत पर पड़े प्रभाव का भी मूल्यांकन किया गया है।

अनुसंधान पद्धति (Research Methodology)

यह अध्ययन गुणात्मक (Qualitative) शोध पद्धति पर आधारित है। इसमें ऐतिहासिक एवं दार्शनिक विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत स्वामी विवेकानंद के भाषण, पत्र तथा The Complete Works of Swami Vivekananda का उपयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोतों में रोमां रोलां, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन तथा समकालीन शोध-पत्रों को सम्मिलित किया गया है। अध्ययन में तुलनात्मक पद्धति अपनाते हुए भारतीय एवं पाश्चात्य दार्शनिक परंपराओं के संदर्भ में विवेकानंद के चिंतन का विश्लेषण किया गया है।

प्रारंभिक जीवन और पारिवारिक पृष्ठभूमि

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में एक शिक्षित और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध परिवार में हुआ। उनका मूल नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। उनके पिता विश्वनाथ दत्त पाश्चात्य शिक्षा, तर्कबुद्धि और उदार विचारधारा के समर्थक थे, जबकि उनकी माता भुवनेश्वरी देवी भारतीय धार्मिक परंपरा, भक्ति और नैतिक संस्कारों की प्रतीक थीं। इन दोनों प्रवृत्तियों—पश्चिमी बौद्धिकता और भारतीय आध्यात्मिकता—का समन्वय नरेंद्रनाथ के व्यक्तित्व में प्रारंभ से ही दृष्टिगोचर होता है। बाल्यावस्था से ही उनमें असाधारण मेधा, निर्भीक स्वभाव और सत्य की खोज की तीव्र आकांक्षा विद्यमान थी, जो आगे चलकर उनके दार्शनिक जीवन की आधारशिला बनी।

शिक्षा, बौद्धिक चेतना और वैचारिक निर्माण

नरेंद्रनाथ की औपचारिक शिक्षा प्रेसीडेंसी कॉलेज तथा जनरल असेंबली इंस्टीट्यूशन जैसे प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों में हुई। इस काल में उन्होंने पाश्चात्य दर्शन, तर्कशास्त्र, विज्ञान, इतिहास और साहित्य का गहन अध्ययन किया। कांट, हेगेल, मिल और स्पेंसर जैसे दार्शनिकों के विचारों ने उनके बौद्धिक क्षितिज को व्यापक बनाया, किंतु साथ ही उनके मन में यह प्रश्न और अधिक तीव्र हो गया कि क्या जीवन का अंतिम सत्य केवल बौद्धिक विमर्श से प्राप्त किया जा सकता है। इसी वैचारिक द्वंद्व के बीच उन्होंने भारतीय वेदांत, उपनिषद और भगवद्गीता का गंभीर अध्ययन किया। यह द्वैत—पश्चिमी तर्क और भारतीय आध्यात्मिकता—उनके चिंतन का केंद्रीय तत्व बन गया।

गुरु रामकृष्ण परमहंस और आध्यात्मिक रूपांतरण

रामकृष्ण परमहंस से नरेंद्रनाथ की भेंट उनके जीवन का निर्णायक मोड़ सिद्ध हुई। प्रारंभ में नरेंद्रनाथ ने गुरु की साधना-पद्धति और ईश्वरानुभूति को संदेह की दृष्टि से देखा, किंतु रामकृष्ण की आध्यात्मिक प्रामाणिकता, करुणा और प्रत्यक्ष अनुभूति ने धीरे-धीरे उनके सभी संशयों का समाधान कर दिया। रामकृष्ण ने उन्हें यह बोध कराया कि सत्य केवल बौद्धिक विवेचन का विषय नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव की अवस्था है। गुरु के देहावसान के पश्चात नरेंद्रनाथ पर आध्यात्मिक उत्तराधिकार और सामाजिक उत्तरदायित्व दोनों का भार आ गया, जिसने उन्हें संन्यास की ओर प्रेरित किया।

संन्यास, भारत भ्रमण और सामाजिक यथार्थ

1886 में संन्यास ग्रहण करने के पश्चात नरेंद्रनाथ स्वामी विवेकानंद के नाम से विख्यात हुए। इसके बाद उनका भारत

भ्रमण केवल एक धार्मिक यात्रा नहीं था, बल्कि एक गहन सामाजिक सर्वेक्षण था। इस यात्रा में उन्होंने भारत की ग्रामीण और शहरी दोनों वास्तविकताओं को निकट से देखा—गरीबी, भुखमरी, जातिगत विषमता, अशिक्षा और सामाजिक शोषण। साथ ही उन्होंने भारतीय समाज की आध्यात्मिक शक्ति, सांस्कृतिक सहिष्णुता और आंतरिक ऊर्जा को भी पहचाना। इस अनुभव ने उनके चिंतन को एक स्पष्ट दिशा दी कि भारत का पुनर्निर्माण सेवा, शिक्षा और आत्मबोध के माध्यम से ही संभव है।

शिकागो धर्म महासभा और वैश्विक वैचारिक प्रभाव

1893 में शिकागो में आयोजित विश्व धर्म महासभा में स्वामी विवेकानंद का भाषण भारतीय बौद्धिक इतिहास का एक निर्णायक क्षण था। उनके उद्बोधन ने न केवल भारतीय वेदांत को विश्व मंच पर प्रतिष्ठित किया, बल्कि धार्मिक सहिष्णुता और मानव एकता की अवधारणा को भी सशक्त रूप से प्रस्तुत किया। यह भाषण पश्चिमी जगत में भारत की एक नई छवि—एक आध्यात्मिक और दार्शनिक राष्ट्र—के निर्माण में सहायक सिद्ध हुआ।

विवेकानंद का दर्शन : अद्वैत और व्यवहारिक वेदांत

स्वामी विवेकानंद का दर्शन अद्वैत वेदांत पर आधारित था, किंतु वह केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि पूर्णतः व्यवहारिक था। वे मानते थे कि प्रत्येक आत्मा मूलतः दिव्य है और मानव जीवन का लक्ष्य इस दिव्यता की अभिव्यक्ति है। कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग और राजयोग को उन्होंने जीवन की समग्र साधना के रूप में प्रस्तुत किया। उनका वेदांत सामाजिक सेवा, मानव कल्याण और नैतिक उत्तरदायित्व से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ था।

रामकृष्ण मिशन : सेवा और साधना का समन्वय

1897 में स्थापित रामकृष्ण मिशन स्वामी विवेकानंद की व्यवहारिक दर्शन-दृष्टि का मूर्त रूप है। शिक्षा, स्वास्थ्य, आपदा राहत और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में मिशन का कार्य यह सिद्ध करता है कि विवेकानंद के लिए सेवा और साधना में कोई द्वैत नहीं था। उनके अनुसार 'दरिद्र नारायण' की सेवा ही सच्ची ईश्वर-आराधना है।

समकालीन प्रासंगिकता और निष्कर्ष

इक्कीसवीं शताब्दी के वैश्विक संदर्भ में, जब मानव समाज सांस्कृतिक संघर्ष, नैतिक संकट और आध्यात्मिक शून्यता से जूझ रहा है, स्वामी विवेकानंद के विचार अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। उनका जीवन और दर्शन आत्मविश्वास, सहिष्णुता और मानव-सेवा का मार्ग प्रशस्त करता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि स्वामी विवेकानंद केवल अपने युग के प्रतिनिधि नहीं, बल्कि सार्वकालिक और सार्वभौमिक चिंतक हैं, जिनकी वैचारिक विरासत आज भी मानवता को दिशा प्रदान कर रही है।

संदर्भ सूची (References & Citations)

इस शोध-पत्र में उद्धृत विचारों के लिए लेखक–वर्ष (Author–Year) उद्धरण प्रणाली अपनाई गई है।

1. *The Complete Works of Swami Vivekananda*, Advaita Ashrama
2. रोमां रोलां – स्वामी विवेकानंद
3. विवेकानंद साहित्य, रामकृष्ण मठ
4. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन – भारतीय दर्शन
5. National Archives of India